

लतीभिः R. 3, 19. शैरापर्ययद्रामः परिघम् R. 3, 32, 15. — Vgl. आपूरु (ग.), डरापूरु.

— समा (पूर्वते) sich füllen, voll werden: एवमायुष्मतीभिस्तु प्रजाभिः

— इयं सागरपर्यया समापूर्यत मेदिनी MBh. 1, 2472. समापूर्या voll, ganz: संवत्सर R. Gorr. 1, 68, 21. — caus. voll machen: (न्यूनम्) एतैः समपूर्यत Çat. Br. 10, 2, 3, 16. spannen (einen Bogen) R. Gorr. 1, 34, 9.

— उद्दू caus. auffüllen: उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु (nämlich दूर्वो) RV. 5, 6, 9.

— उप auffüllen: उद्धा सिञ्चधुमुप वा पृथाधम् (आसिचम्) RV. 7, 16, 11.

— नि niedergessen, niedersetzen, ausschütten (technischer Ausdruck beim Manenopfer): यो ते धेनुं निपृणामि याम् ते क्षीरं श्रेद्दन्म् AV. 18, 2, 30. यन्मांसं निपृणामि ते 4, 42. Çat. Br. 14, 4, 2, 29. अग्नौ स्थालीपाकम् KAUC. 82, 84. ऋच. Çr. 2, 6. निपृत 7. निपृणयात् LĪTJ. 3, 2, 11.

— निम् ausgiessen: क्वथं क्वथं (so ist zu lesen) च विविधं निष्पूर्तं कृतमेव च MBh. 7, 2239.

— परि sich füllen, voll werden: इत्थं कृतयुग्धेयैर्धर्म्यवृत्तात्तवस्तुभिः । स्वल्पो ऽपि राश्यकालो ऽस्य पर्याप्तिः पर्यपूर्यत ॥ RĀGA-TAR. 4, 109. परिपूर्णा angefüllt, voll KAUC. 122. गन्धाम्बुपरिपूर्णाश्च कुम्भान् R. Gorr. 2, 67, 6. PAÑKĀT. 62, 25. अश्रुपरिपूर्णाती MBh. 3, 2595. PAÑKĀT. 64, 4. स्फुरन्नीलाब्जानां प्रकरपरिपूर्णा इव दिशः Spr. 771. कोशश्चापि विशोर्षो ऽयं परिपूर्णाः (so ist zu lesen) MBh. 14, 60. नदीश Spr. 153. चन्द्र M. 9, 309. R. 2, 40, 30. R. Gorr. 2, 122, 23. MRĀKĪ. 1, 12. PAÑKĀT. I, 370. तद्यथा गर्भो वर्धमानः सर्वाङ्गपरिपूर्णा वर्धते Pat. zu P. 8, 2, 106. überdeckt, überzogen: कर्पूरपूर्णापरिपूर्णामुखी KĀURAP. 9. befriedigt: मानस R. Gorr. 2, 30, 39. 4, 62, 25. der vollauf hat, obenauf stehend: सर्वमलञ्जाकरमिह यथत्कुर्वन्ति परिपूर्णाः PAÑKĀT. V, 10. शत्रु I, 370. vollkommen: अन्तरं ब्रह्म Bhāg. P. 8, 3, 21. परिपूर्णातम (कृत्वा) BRAHMAV. P. in Verz. d. Oxf. H. 26, b, 15. परिपूर्णात् der sein Ziel erreicht hat R. 6, 105, 22. einen vollen Sinn habend, sehr verständig: वचन MBh. 1, 6797. R. 5, 73, 49. परिपूर्णा ohne अर्थ dass.: परिपूर्णाभाषणी 3, 32, 52. Vgl. धृतिपरिपूर्णा, परिपूर्ति. — caus. füllen, anfüllen, voll machen: अचलनितम्बनिगोतोदकपरिपूर्णा (अटवी) PAÑKĀT. ed. OFH. 4, 11. लावण्यवारिपरिपूर्णाशतकुम्भकुम्भौ Spr. 303. मणिरत्नसुवर्णानां मालाभिः परिपूर्णातम् (स्थानम्) MBh. 3, 7323. ननु जनविदितैर्भवद्यत्नां केशिपरिपूर्णातमेव कर्णयुग्मम् ŚĀH. D. 50, 3. (mit Geräusch) erfüllen: रोत्मन्वाः परिपूर्यतु करितो (= दिशो) कञ्जारकोलाकृत्वाः ŚĀH. D. 79, 13. vom Geräusch selbst: तलशब्दे कानशब्दे रोदसी पर्यपूर्यतु HARIV. 13742. viell. ausfüllen, vollkommen bedecken, ganz einnehmen (ein Lager): परिपूर्णातमुरतवितान Gīt. 2, 16. qui omnem voluptatis ambitum (वितान = समूह Schol.) emensus est LASS. durchmessend die Bahn von Genüssen RÜCKERT. Vgl. परिपूर्क. ०पूर्णा.

— संपरि, ०पूर्णा erfüllt: ०काम R. 2, 82, 30 (89, 12 Gorr.). vollendet: तपस्विनं संपरिपूर्णाविद्यम् MBh. 3, 15641.

— प्र 1) füllen, ergänzen: प्र प्र यज्ञं पृणीतान् RV. 5, 3, 5. — 2) ०पूर्वते sich füllen, sich anfüllen, voll werden: शक्तिनापि प्रपूर्यते (दधोदरम्) so v. a. satt werden Hit. I, 62. द्यौर्विषद्भृद्दिशश्चैव प्रपूर्णा निशिते: शैः MBh. 8, 2291. किमतेयप्रपूर्णाभिर्भाभिः HARIV. 2473. शाब्दो क्वाकाङ्क्षा शब्देनैव प्रपूर्यते vollständig werden ŚĀH. D. 13, 4. सत्पं प्रपूर्यताम् die Wahrheit erfülle sich UPAG. AV. 13. — caus. anfüllen, voll machen:

बाणगणो न राघवः । प्रपूर्यामास नभश्च R. 6, 80, 42. आवासा बहुभ-
द्वान्नाः सर्वकामैः प्रपूर्यिताः R. Gorr. 1, 12, 11. durch प्रपूर्यित wird उ-
ग्ध erklärt TRIK. 3, 3, 218. erfüllen (von einem Geräusch): सिंहनदिश्च
प्रूर्णा दिशः सर्वाः प्रपूर्यिताः MBh. 9, 3092. vervollständigen: ऐतरेयक-
नाश्रित्य तदेवान्यैः प्रपूर्यन् SHADGURUÇ. bei MÜLLER, SL. 237, 15. reich
machen: कौशितुच्छ्रयति प्रपूर्यति वा (विधिः) MRĀKĪ. 178, 4.

— अभिप्र (पूर्वते) sich füllen: कश्चिन्व्यायानुच्छिद्य कोशस्ते ऽभिप्रपूर्यते
MBh. 13, 678.

— प्रति, ०पूर्णा angefüllt mit, voll: नगैर्विषयश्चास्य प्रतिपूर्णास्तदाभ-
वत् MBh. 13, 98. आयुध (रथ) HARIV. 5654. क्षिराय (गृह) 6546. अश्रु-
लोचना R. 2, 25, 44. BHATT. 3, 28. व्याधिभिः प्रतिपूर्णा ऽस्मि KHĀND. UP.
4, 10, 3. चन्द्र: ०विम्बः MBh. 12, 740. befriedigt: मानस HARIV. 6492.—
caus. füllen, anfüllen, vollmachen: गर्तं यामुभिः प्रतिपूर्येत् ऋच. GRRJ.
2, 8. SUÇR. 2, 97, 4. फाणितप्रतिपूर्यित HARIV. 7829. erfüllen (von einem
Geräusche): शब्दः — दिशः खं प्रतिपूर्यन् MBh. 14, 2122. ननाद बलवा-
न्नाजंस्तत्तैर्न्यं प्रत्यपूर्यन् 6, 1739. satt machen, zufriedenstellen, befrie-
digen: न तल्लोकं द्रव्यमास्तं यल्लोकं (die Menschen) प्रतिपूर्येत् 13, 4442.
स्वारिष्यलाभप्रतिपूर्णातम् Bhāg. P. 8, 5, 44. — Vgl. प्रतिपूर्णा.

— सम् (पूर्वते) sich füllen, voll werden: यथासौ लोक एव बहुभिः पुनः
पुनः प्रयद्भिर्न संपूर्यते Çat. Br. 14, 9, 1, 2. संपूर्णा angefüllt mit, erfüllt von,
voll: पृषदायस्य संपूर्णान् श्रुवान् R. 6, 96, 12. वसुसंपूर्णा वसुंधरा N. 3, 46.
हस्त्यश्चर्यसंपूर्णा (अयोध्या) R. 1, 5, 16. 6, 2, 8. शक्तिन संपूर्णातेरा बभूव R.
Gorr. 2, 73, 31. voll vom Monde Spr. 307. ŚĀH. D. 43, 1. BHATT. 8, 62. त-
तः सर्वाङ्गसंपूर्णा गर्भो वै स तु ज्ञायते MBh. 11, 106. SUÇR. 1, 147, 14. दृष्टि
ein voller Blick ŚĀH. D. 54, 22. vollständig, ganz von einer Zahl, ein-
nem Maasse: सकृन् HARIV. 12038. योजनशत R. 1, 32, 17. दशयोजन 1, 63.
संपूर्णलक्षणा voll der Zahl nach KATHĀS. 3, 33. संपूर्णाप्रायमकिम्भम् RĀGA-
TAR. 3, 24. काल erfüllt, voll KATHĀS. 43, 148. विम्ब Reichthümer in
vollem Maasse Spr. 779. यौवन die volle Jugend KĀURAP. 43. संपूर्णाफ-
लभाज् die volle, ganze Frucht M. 1, 109. vollauf habend Spr. 307. BHATT.
2, 37. in Erfüllung gegangen, erfüllt: मनोरथ MRĀKĪ. 174, 5. ÇĀK. 106,
3. PRAB. 104, 11. काम KUMĀRAS. 6, 85. ०स्पृहता ŚĀH. D. 73, 7. — caus.
anfüllen, voll machen: तेन भित्तिर्निर्तितः सक्तुभिः भुक्तशेषैः कलशः संपूर्-
तः PAÑKĀT. 252, 10. वर्षस्य वेषम वसुभिः सः — समपूर्यत् KATHĀS. 2, 83.
दश पूर्येयुः die Zahl zehn voll machen LĪTJ. 9, 2, 6. erfüllen (mit Ge-
räusch): दिशः संपूर्यन्नादः MBh. 3, 1716. R. 5, 39, 18. ein Verlangen: तं
च दोहदं तस्याः — मलयत्वेन्द्रजालादिप्रयोगैः समपूर्यत् KATHĀS. 22, 12.

2. पर, पिंपति (Dhātup. 23, 4. P. 7, 4, 77), पिंपति, पिंपतन, पिंपतं,
पोपक्ति (Bhāg. P. 7, 9, 41); nach Dhātup. 31, 19 auch पूर्णाति in der Bed. पा-
लन; पूर्णाति s. u. 3. पर mit घ्रा. परिष, पर्यत्, पर्यति, पर्यन्, पर्यथस, परिषत्,
पर्य; अवारोत् BHATT. 13, 100; पपरतुस् und पप्रतुस्, पपरुस् und पप्रुस् P. 7,
4, 72. Vgl. तर. 1) hinüberführen, hinüberbringen über oder zu (acc.):
यो वं समुद्रान्सरितः पिंपति RV. 7, 70, 2. स्वस्ति नः पिंपक्ति पारमामाम्
3, 31, 20. परिष नः पारमहेमः 2, 33, 3. विश्वानि दुर्गा पिंपतं तिरो नः 7,
60, 12. पृथग्भिः पर्येकैः 6, 4, 8. वृञ्जिनवर्तन्ति नरं पिंपति विद्वे 1, 31, 6. —
2) hinausführen, erretten aus (abl.): geleiten, beschützen: तां अहेमः पि-
पक्ति पतं भिष्णुम् RV. 7, 16, 10. 6, 48, 10. तमग्ने पास्यत तं पिंपति 13, 11.
VS. 5, 34. RV. 5, 4, 6. 10, 35, 8. (अश्विनोः) मेद् तोमस्य पिंपतिः 1, 46, 12. प-